

## षष्ठः पाठः लौहतुला

अयं पाठः विष्णुशर्मविरचितस्य "पश्चतन्त्रम्" इति कथाग्रन्थस्य मित्रभेदनामकात् तन्त्रात् सम्पाघ्यः गृहीतः अंशः अस्ति। अस्यां कथायाम् एकः जीर्णधननामकः विणक् विदेशात् व्यापारं कृत्वा प्रति निवृत्य न्यासरूपेण प्रदत्तां तुलां धनिकात् प्रति याचते। परश्च सः धनिकः वदित यत् तस्य तुला तु मूषकैः भिक्षता, ततः सः विणक् धनिकस्य पुत्रं स्नानार्थं नदीं प्रति नयित, तं तत्र नीत्वा च सः एकस्यां गृहायां गोपितवान्। अथ तिस्मन् प्रत्यावृते तेन सह पुत्रम् अदृष्ट्वा धनिकः पृच्छित मम शिशुः कुत्रास्ति? सः वदित यत् तव पुत्रः श्येनेन अपहृतः। तदा उभौ विवदमानौ न्यायालयं प्रति गतौ, यत्र न्यायाधिकारिणः न्यायं कृतवन्तः।

आसीत् कस्मिश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम विणक्पुत्रः। स च विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्–

> यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ताः स्ववीर्यतः। तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः।।

तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुला आसीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थित:। तत: सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुन: स्वपुरम् आगत्य तं श्रेष्ठिनम् अवदत्-''भो: श्रेष्ठिन्! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।'' सोऽवदत्-''भो:! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकै: भिक्षता'' इति।

जीर्णधनः अवदत्-''भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैः भिक्षता। ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गिमष्यामि। तत् त्वम् आत्मीयं एनं शिशुं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय'' इति।

स श्रेष्ठी स्वपुत्रम् अवदत्-''वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यित, तद् अनेन साकं गच्छ'' इति। अथासौ श्रेष्ठिपुत्रः धनदेवः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहत्शिलया पिधाय सत्त्वरं गृहमागतः।

सः श्रेष्ठी पृष्टवान्-''भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुः यः त्वया सह नदीं गतः''? इति।

स अवदत्-''तव पुत्र: नदीतटात् श्येनेन हृत:' इति। श्रेष्ठी अवदत् – ''मिथ्यावादिन्! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदियष्यामि।'' इति।

सोऽकथयत्-''भो: सत्यवादिन्! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।'' इति।



एवं विवदमानौ तौ द्वाविप राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण अवदत्-"भोः! विञ्चतोऽहम्! वञ्चितोऽहम्! अब्रह्मण्यम्! अनेन चौरेण मम शिशुः अपहृतः' इति। अथ धर्माधिकारिणः तम् अवदन् -''भोः! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुतः''। सोऽवदत्-''किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटात् श्येनेन शिशुः अपहृतः''। इति। तच्छुत्वा ते अवदन्-भोः! भवता सत्यं नाभिहितम्-किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति? सोऽवदत्-भोः भोः! श्रूयतां मद्वचः-

> तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषका:। राजन्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशय:।।

ते अपृच्छन्-''कथमेतत्''।

ततः स श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयत्। ततः, न्यायाधिकारिणः विहस्य, तौ द्वावपि सम्बोध्य तुला-शिशुप्रदानेन तोषितवन्तः।

# <्रें> शब्दार्थाः <्रें

| अधिष्ठाने     | स्थाने            | स्थान पर        | At establishment |
|---------------|-------------------|-----------------|------------------|
| विभवक्षयात्   | धनाभावात्         | धन के अभाव      | Due to loss of   |
|               |                   | के कारण         | weather          |
| स्ववीर्यतः    | स्वपराक्रमेण      | अपने पराक्रम से | With own effort  |
| लौहघटिता तुला | लौहनिर्मिता तुला  | लोहे से बनी     | Iron balance     |
|               |                   | हुई तराजू       |                  |
| निक्षेप:      | न्यास:            | धरोहर           | Deposit          |
| भ्रान्त्वा    | भ्रमणं कृत्वा     | पर्यटन करके     | After visit      |
|               | (देशाटनं कृत्वा)  |                 |                  |
| त्वदीया       | तव, भवदीया        | तुम्हारी        | Yours (f)        |
| ईदृश:         | एतादृश:           | ऐसा ही          | Like this        |
| एनम्          | एतम्/एनम् च पुंसि | इसे, एतत् शब्द  | This (m)         |
|               |                   | पुं. द्वि. वि.  |                  |
| •             | द्वितीयैकवचने उभे | ए. व. में एतत्/ |                  |
|               |                   | एनम् दोनों ही   |                  |
|               | एव रूपे भवतः।     | रूप होते हैं।   |                  |

| आत्मसम्बन्धि   | अपना  | Own   |
|----------------|---|---|
| स्नानसामग्री   | स्नान की सामग्री से   | Having  |
| हस्ते यस्य     | युक्त हाथ वाला।   | paraphernalia   |
| सः, तम्        |   |   |
| देहि           | दो  | Surrender   |
| कलहं कुर्वन्तौ | झगड़ा करते हुए  | Both of them  |
| उच्चस्वरेण     | जोर से  | Loudly  |
| उक्तवन्त:      | बोले  | (They) said   |
| कथितम्         | कहा गया   | Told  |
| मम वचनानि      | मेरी बातें  | My statement  |
| प्रारम्भत:     | आरम्भ से  | From the beginning  |
| निवेदनमकरोत्   | निवेदन किया   | (He/she) requested  |
| हसित्वा        | हँसकर   | Laughing  |
| बोधयित्वा      | समझा बुझाकर   | Addressing  |
|                | स्नानसामग्री हस्ते यस्य सः, तम् देहि कलहं कुर्वन्तौ उच्चस्वरेण उक्तवन्तः कथितम् मम वचनानि प्रारम्भतः निवेदनमकरोत् हसित्वा | स्नानसामग्री स्नान की सामग्री से हस्ते यस्य युक्त हाथ वाला। सः, तम् देहि दो झगड़ा करते हुए उच्चस्वरेण जोर से उक्तवन्तः बोले कथितम् कहा गया मम वचनानि मेरी बातें प्रारम्भतः आरम्भ से निवेदनमकरोत् निवेदन किया हिसत्वा हैंसकर |



#### 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) वणिक्पुत्रस्य किं नाम आसीत्?
- (ख) तुला कै: भिक्षता आसीत्?
- (ग) तुला कीदृशी आसीत्?
- (घ) पुत्र: केन हत: इति जीर्णधन: वदित?
- (ङ) विवदमानौ तौ द्वाविप कुत्र गतौ?

#### 2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) देशान्तरं गन्तुमिच्छन् विणक्पुत्रः किं व्यचिन्तयत्?
- (ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत्?
- (ग) जीर्णधन: गिरिगुहाद्वारं कया पिधाय गृहमागत:?
- (घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः विणक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् अवदत्?
- (ङ) धर्माधिकारिण: जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं तोषितवन्त:?

| 3. | स्थूलप | थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्निर्माणं कुरुत-                              |          |                               |  |
|----|--------|--|----------|-------------------------------|--|
|    | (क)    | जीर्णधनः विभवक्षयात् देशान्तरं                                     | गन्तुर्ग | मेच्छन् व्यचिन्तयत्।          |  |
|    | (碅)    | श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमाद                                     | ाय अ     | <b>भ्यागतेन</b> सह प्रस्थित:। |  |
|    |        | वणिक् गिरिगुहां बृहच्छिलया   |          |                               |  |
|    | (ঘ)    | सभ्यै: तौ परस्परं संबोध्य <b>तुला</b>                              | -शिश्    | <b>ु-प्रदानेन</b> सन्तोषितौ।  |  |
| 4. | अधोवि  | ोलिखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः, पाठमाधृत्य तं पूरयत- |          |                               |  |
|    |        |  |          | ॥: भुक्ता।                    |  |
|    | (폡)    | राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य तुलां                                      | मूषक     | ा: खादन्ति।                   |  |
| 5. | तत्पदं | रेखाङ्कितं कुरुत यत्र-   |          |                               |  |
|    | (क)    | ल्यप् प्रत्ययः नास्ति  |          | 1 .6                          |  |
|    | (폡)    | विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य,<br>यत्र द्वितीया विभक्ति: नास्ति     | आदा      |                               |  |
|    | (ಆ)    | श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्व                                  | ா ச      | तर्यकारणम                     |  |
|    | (刊)    | यत्र षष्ठी विभिक्तः नास्ति   |          |                               |  |
|    | ` ′    | पश्यत:, स्ववीर्यत:, श्रेष्ठिन: स                                   | भ्यानाम  | 1                             |  |
| 6. |        |  |          |                               |  |
|    | (क)    | श्रेष्ठ्याह =  |          | + आह                          |  |
|    | (폡)    |  | द्वौ +   | अपि                           |  |
|    | (ग)    | पुरुषोपार्जिता =   | पुरुष    | +                             |  |
|    | (ঘ)    | =  | यथा      | + इच्छया                      |  |
|    | (ङ)    | स्नानोपकरणम् =   | *****    | + उपकरणम्                     |  |
|    | (च)    | ······ =   | स्नान    | + अर्थम्                      |  |
| 7. | समस्त  | पदं विग्रहं वा लिखत-   |          |                               |  |
|    |        | विग्रह:  |          | समस्तपदम्                     |  |
|    | (क)    | स्नानस्य उपकरणम् =   |          |                               |  |
|    | (폡)    | ····· =  |          | गिरिगुहायाम्                  |  |

(ग) धर्मस्य अधिकारी = .....

(घ) ..... = विभवहीना:

(अ) यथापेक्षम् अधोलिखितानां शब्दानां सहायतया ''लौहतुला'' इति कथायाः सारांशं संस्कृतभाषया लिखत-

वणिक्पुत्रः स्नानार्थम् लौहतुला अयाचत् वृत्तान्तं ज्ञात्वा श्लेष्ठिनं प्रत्यागतः गतः प्रदानम्

#### <्रें> योग्यताविस्तारः <्रेंं>

यह पाठ विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्रम्' नामक कथाग्रन्थ के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से सङ्कलित है। इसमें विदेश से लौटकर जीर्णधन नामक व्यापारी अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से माँगता है। 'तराजू चूहे खा गये हैं' ऐसा सुनकर जीर्णधन उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी तट पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि 'पुत्र को बाज उठा ले गया है।' इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।

#### ग्रन्थ परिचय

महाकवि विष्णुशर्मा (200 ई. से 600 ई. के मध्य) ने राजा अमरशक्ति के पुत्रों को राजनीति में पारंगत करने के उद्देश्य से 'पञ्चतन्त्रम्' नामक सुप्रसिद्ध कथाग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ पाँच भागों में विभाजित है। इन्हीं भागों को 'तन्त्र' कहा गया है। पञ्चतन्त्र के पाँच तन्त्र हैं-मित्रभेद:, मित्रसंप्राप्ति:, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाश: और अपरीक्षितकारकम्। इस ग्रन्थ में अत्यन्त सरल शब्दों में लघु कथाएँ दी गयी हैं। इनके माध्यम से ही लेखक ने नीति के गृढ़ तत्त्वों का प्रतिपादन किया है।

# <्रें> भावविस्तारः <्रें

'लौहतुला' नामक कथा में दी गयी शिक्षा के सन्दर्भ में इन सूक्तियों को भी देखा जाना चाहिए।

- न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपु:। व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।
- 2. आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

### <्रें>भाषिकविस्तारः <्रें>

तिसल् प्रत्यय-पञ्चमी विभिक्त के अर्थ में तिसल् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा- ग्रामात् - ग्रामतः (ग्राम + तसिल्)

आदे: - आदित: (आदि + तसिल्)

यथा- छात्र: विद्यालयात् आगच्छति।

छात्र: विद्यालयत: आगच्छति।

इसी प्रकार - गृह + तिसल् - गृहतः - गृहात्।

तन्त्र + तसिल् - तन्त्रतः - तन्त्रात्।

प्रथम + तसिल् - प्रथमतः - प्रथमात्।

आरम्भ + तसिल् - आरम्भतः - आरम्भात्।

2. अभितः परितः उभयतः, सर्वतः, समया, निकषा, 'हा' और प्रति के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा- गृहम् अभितः वृक्षाः सन्ति।

विद्यालयम् परितः द्रुमाः सन्ति।

ग्रामम् उभयतः नद्यौ प्रवहतः।

हा दुराचारिणम्।

क्रीडाक्षेत्रम् निकषा तरणतालम् अस्ति।

बालक: विद्यालयम् प्रति गच्छति।

नगरम् समया औषधालयः विद्यते।

ग्रामम् सर्वतः गोचारणभूमिः अस्ति।